Volume: 5 Issue: 11 Pages: 12-14



भारतीय दर्शनों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के बीज रूपी तत्व।

[*1] डॉ. सुरेन्द्र प्रताप और [2] डॉ. अभिषेक सेंगर

[*1,2] सहायक प्रोफेसर, शिक्षा संकाय-बी.एड, म०प्र०राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 16/Oct/2026
Accepted: 11/Nov/2026

***Corresponding Author**
डॉ. सुरेन्द्र प्रताप
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा संकाय-बी.एड,
म०प्र०राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हरदोई, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश:
भारतीय ज्ञान परम्परा का दार्शनिक आधार, वेदों, उपनिषदों, दर्शन, ग्रन्थों और विविध ज्ञान शाखाओं से विकसित हुआ है, जो अत्यन्त समृद्ध और व्यापक है। प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा के दार्शनिक आधार का उल्लेख करना साथ ही उसका समाज और संस्कृति में योगदान के परिप्रेक्ष्य के महत्त्व को दर्शाना है। अद्वैत वेदां, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मी मांशा और बौद्ध, जैन दर्शन जैसी विभिन्न दार्शनिक प्रणालियाँ भारतीय चिंतन का मूल आधार रहे हैं।

मुख्य शब्द: दर्शन, सांख्य, उपनिषद, न्याय वैशेषिक योग मीमांसा और वेदान्त भारतीयज्ञान प्रणाली, बीज।

प्रस्तावना:
भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल अतीत की धरोहर ही नहीं बल्कि एक जीवंत दार्शनिक प्रणाली है, जो आधुनिक जीवन में भी प्रासंगिक बनी हुई है। यह परम्परा आत्मा, ब्रह्म, सत्य धर्म और मोक्ष जैसे उच्च विचारों पर आधारित है। यह न केवल अध्यात्मिक और धार्मिक विचार धाराओं को समेटे हुए है। बल्कि यह विज्ञान, दर्शन कला और साहित्य में भी गहराई से जुड़ी हुयी है।
भारतीय विचारधाराओं में दर्शन शब्द का प्रयोग कई अर्थो में किया जाता है। व्याकरण में यह शब्द दृश धातु से बना है, जिसका अर्थ देखना है इसी धातु से ऋषि शब्द भी बना है, जिसका अर्थ है, देखने वाला। ऋषि वह है जिसने जीवन अथवा विश्व के रहस्य को देखा। अतः दर्शन शब्द का अर्थ रहस्य का साक्षात्कारमाना जाता है। दूसरा अर्थ निराकार प्रतीति या आत्मा का किसी वस्तु को जानने के लिए प्रथम आवर्जन। जान का प्रारम्भ उस दर्शन से होता है। दार्शनिक विचार धाराओं को चर्चा करते समय दर्शन शब्द का अर्थ मुख्यतः विश्व के रहस्य का साक्षात्कार माना जाता है। सभी दर्शनों ने अपनी-अपनी दृष्टि से विश्व का जो रहस्य देखा, उसका तर्क और अनुभव के आधार पर प्रतिपादन किया, वही प्रत्येक विचारधारा का साहित्य बन गया।
भारतीय दर्शन की शुरूआत वैदिक युग से मानी जाती है, जिसमें वेद, उपनिषद और अन्य ग्रन्थ शामिल है। भारतीय दर्शन मुख्यतः दो परम्पराओं में विभाजित है- 1. आस्तिक, और 2. नास्तिक ।
आस्तिक दर्शन वे हैं, जो वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हैं, जैसे-सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत। नास्तिक दर्शनः- वे है जो वेदो को अंतिम ज्ञान का स्त्रोत नहीं मानते जैसेः- बौद्ध, जैन और चार्वाक दर्शन।
यह दार्शनिक परम्परायें भिन्न विचारधाराओं पर आधारित है, जिन्होंने न केवल भारतीय संस्कृति को आकार दिया, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी उसका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। प्रमुख दार्शनिक आधार और उनके दृष्टिकोण निम्नांकित हैं।
वेदांत- वेदांत भारतीय दर्शन की एक प्रमुख परंपरा है, जो उपनिषदों के सिद्धान्तों पर आधारित है। वेदांत का मुख्य उद्देश्य आत्मा (आत्मन) और ब्रह्म (सर्वव्यापी आप्मा) के बीच संबंध को समझना है। अद्वैत वेदांत जिसे शंकराचार्य ने प्रतिष्ठित किया, यह मानता है कि आत्मा एक और ब्रह्म एक ही हैं, और इस सच्चाई को अनुभव करना मोक्ष की प्राप्ति है। उपनिषदों में कहा गया है- अहं ब्रह्मास्मि यानी मैं ही ब्रह्म हूँ। यही से अद्वैत वेदात की नींव पड़ी।

सांख्य दर्शन- सांख्य मत अत्यंत प्राचीन है। श्रुति, स्मृति, पुराण आदि सभी पुरातन कृतियों में सांख्य की विचारधारा विद्यमान है। इसके सिद्धांतों की उपलब्धि उपनिषदों में होती है। यद्यपि सांख्य शब्द योग शब्द के साथ श्वेताश्वतरोपनिषद् (6.13) में पहली बार उल्लिखित हुआ है, तथापि इसके अनेक सिद्धांत उससे भी प्राचीन उपनिषदों में बीज रूप में मिलते हैं। सत्त्व, रज, तम-यह त्रिगुण का सिद्धांत प्रथमतः छान्दोग्योपनिषद् में दृष्टिगोचर होता है। ईश्वर और प्रकृति के वर्णन भी उपनिषदों में मिलते हैं।

मानव जीव मानव जीवन का लक्ष्य इन तीनों प्रकार के दुःखों से छुटकारा पाना है। यही मोक्ष है, मुक्ति है या अपवर्ग है। सभी मनुष्य दुःखों से बचना चाहते हैं व आनंद की कामना करते हैं, परंतु ऐसा होता नहीं है। सभी दुःखों से एकबारगी छुटकारा पा जाना असंभव है। जब तक यह नश्वर शरीर है, जब तक ये दुर्बल इंद्रियां हैं, तब तक सभी सुखों का दुःख मिश्रित होना अथवा अधिक होना अवश्यंभावी है। इसलिए हम सुखवाद का आदर्श (आनंद भोग) परित्याग कर उससे कम आकर्षक, परंतु अधिक युक्तिसंगत ध्येय, दुःखों की निवृत्ति से ही संतोष करें। यही दुःखों की अत्यंत निवृत्ति है, जिसका अर्थ होता है सभी दुःखों का सर्वदा के लिए निवारण, जिससे दुःख की कभी पुनरावृत्ति नहीं हो सकें।

प्राचीन भारतीय दर्शन का एक महत्त्वपूर्ण स्कूल है। महर्षि कपिल सांख्य दर्शन के संस्थापक माने जाते हैं। यह दर्शन मुख्य रूप से तत्वों की संख्या और उनके आपसी सम्बन्ध पर आधारित है जो आत्मा और प्रकृति के बीच भेद को समझने में मदद करता है, और जिससे व्यक्ति आत्मिक उन्नति और मोक्ष की दिशा में प्रेरित होता है। सांख्य दर्शन के अनुसार, सभी जीवों में एक शुद्ध चेतना (पुरुष) है, जिससे समानता और न्याय की भावना उत्पन्न होती है। उस दर्शन के सिद्धान्त व्यक्ति को आत्मनियन्त्रण, ध्यान और साधना की ओर प्रेरित करते हैं, जो समाज में शांति और समृद्धि लाने में सहायक है।

योग दर्शन- सांख्य के तत्वों और पुरुष की अवधारणा ने योग दर्शन को आकार देने में मदद की है। योग दर्शन महर्षि पतंजलि के योग सूत्रों पर आधारित है, जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास पर केन्द्रित है। योग का उद्देश्य मन को नियंत्रित करना और आत्मा के साक्षात्कार के लिए उसे तैयार करना है। योग के अष्टांग (आठ अंग) जैसे यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान और समाधि के माध्यम से व्यक्ति अपनी आत्मा को जान सकता है।

न्याय दर्शन- न्याय दर्शन का मुख्य उद्देश्य तर्क और प्रमाण के माध्यम से सत्य को जानना है। यह दर्शन तर्कशास्त्र और प्रमाण पर आधारित है। न्याय दर्शन के संस्थापक कौटिल्य (चाणक्य) माने जाते हैं, जिन्होंने न्याय के विभिन्न तत्वों और प्रमाणों पर विचार किया।

आस्तिक दर्शनों में न्यायदर्शन प्राचीनकाल से ही बहुत प्रतिष्ठा के साथ देखा जाता रहा है। मनु ने इसका समावेश श्रुति के अंदर किया है, याज्ञवल्क्य ने भी इसे वेद के चार अंगों में से एक माना है। हिंदुओं के पांच प्राचीन पाठ्य विषयों-काव्य (साहित्य), नाटक, अलंकार, तर्क (न्यायदर्शन) और व्याकरण में न्याय की भी गणना की गई है। न्यायदर्शन में प्रधानतः शुद्ध विचारों के नियमों तथा तत्त्वज्ञान प्राप्त करने के उपायों का वर्णन किया गया है। न्याय के अध्ययन से युक्तियुक्त विचार करने तथा आलोचना करने की शक्ति बढ़ती है, इसलिए न्यायदर्शन को न्यायविद्या, तर्कशास्त्र तथा आन्वीक्षिकी भी कहते हैं। आन्वीक्षिकी का अर्थ युक्तिपूर्वक आलोचना है।

वैशेषिक दर्शन- वैशेषिक दर्शन विशेष रूप से पदार्थ और उनके गुणों के अध्ययन पर केंद्रित है। इसे महर्षि कणाद ने प्रतिपादित किया, इसे कणाद दर्शन भी कहा जाता है।

मीमांसा दर्शन- मीमांसा दर्शन भारतीय ज्ञान परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। यह वेदों के अनुष्ठानों और क्रियाओं की व्याख्या करता है और वेदों को शाश्वत और अपौरुषेय मानता है। इस दर्शन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि वेदों में दिए गए आदेश और निर्देश कैसे धार्मिक और सामाजिक जीवन को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। यह दर्शन कर्मकांड और कर्मफल के सिद्धान्तों पर आधारित है, जो वेदों में वर्णित धार्मिक क्रियाओं के महत्त्व को स्पष्ट करता है। यह वेदों के माध्यम से समाज में धार्मिक और नैतिक मूल्यों को बनाए रखने में सहायक होता है।

मीमांसा का अर्थ एवं परिभाषा

मीमांसा शब्द का अर्थ है-किसी समस्या का तर्क के द्वारा निर्णय। अतः मीमांसा विचारने योग्य विभिन्न विषयों की समीक्षा प्रस्तुत करता है। इसमें चिंतन-क्रिया प्रमुख हो जाती है। मीमांसा के चिंतन का प्रमुख विषय श्रुति या वेद हैं। वेदों में जिस कर्मकांड का विधान है, उसे मीमांसादर्शन धर्म मानता है तथा इसी धर्म के स्वरूप का परीक्षण यहां किया गया है। वेदों के स्वरूप की रक्षा तथा उसे स्वतः प्रामाण्यवाद द्वारा सिद्ध करना मीमांसा द्वारा ही संभव हुआ। धर्म की परिभाषा है, जिसमें इस लोक तथा परलोक में कल्याण की प्राप्ति हो, उसी को धर्म कहते हैं। इस धर्म (या वेद के अर्थ) का विचार करने वाला शास्त्र मीमांसा कहलाता है। इस धर्म के विवेचन में दार्शनिक विषय भी स्वतः आ जाते हैं। इसी कारण मीमांसादर्शन को छः आस्तिक दर्शनों में सम्मलित कर लिया गया है।

बौद्ध दर्शनः- बौद्ध दर्शन, भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित है, जो चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग पर आधारित है। यह दर्शन आध्यात्मिक उत्थान के साथ सामाजिक सुधार और मानवता के कल्याण में भी योगदान देता है। बौद्ध दर्शन में अहिंसा और करुणा के सिद्धान्त को महत्त्व दिया जाता है। यह समाज में शाति, सद्भावना और सहनशीलता को बढ़ावा देता है। इस दर्शन में जाति, वर्ग या लिंग के भेदभाव को नकारा गया है जिससे समाज में समानता और समानाधिकार की भावना को बढ़ावा मिलता है। इसमें मैत्री और सहिष्णुता को महत्त्व दिया जाता है, जो समाज में समानता आपसी समझ और सहयोग को बढ़ावा देता है।

जैन दर्शन- छठीं शताब्दी ईसा पूर्व में भगवान महावीर ने जैन दर्शन की स्थापना की जैन दर्शन भारतीय ज्ञान परम्परा का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है और इसका समाज पर गहरा प्रभाव रहा है। जैन दर्शन में अहिंसा को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। इसका अर्थ किसी भी जीव को किसी भी रूप में चोट न पहुँचाना। इस सिद्धान्त ने समाज में शांति, सहिष्णुता और सहअस्तित्व की भावना को बढ़ावा दिया है।

जैन दर्शन में सत्य का पालन करना, चोरी न करना (अस्तेय) ब्रह्मचर्य का पालन संयम और आत्म नियंत्रण की शिक्षा देता है। यह अपरिग्रह, यानी असंप्रति या अधिक सामग्री से त्याग को चर्चा भी करता है। जैन दर्शन के सिद्धान्तों ने भारतीय समाज को नैतिकता, अहिंसा और संयम की ओर प्रेरित किया है, साथ ही समाज में शांति सहयोग सहअस्तित्व की भावना को बढ़ावा देता है।

चार्वाक दर्शन- चार्वाक दर्शन ने भारतीय दर्शन में एक अनूठी और विचारशील धारा प्रस्तुत की है, जो भौतिकता और अनुभववाद पर आधारित है। यह दर्शन भौतिक संसार को ही वास्तविक मानता है और आत्मा, स्वर्ग, नरक पुनर्जन्म जैसी अवधारणाओं को नकारता है इसके अनुसार, केवल वही सच है, जो प्रत्यक्ष अनुभव में आता है। यह दर्शन आत्मा, ईश्वर और आत्मा की अविनाशिता को नहीं मानता। इसके अनुसार, मृत्यु के बाद कुछ भी नहीं होता है। इस दर्शन का मुख्य ध्येय जीवन में सुख और भोग का आनन्द लेता है। यह मानता है कि मनुष्य को अपने जीवन का पूरा आनंद उठाना चाहिए।

इन विचारधाराओं के अतिरिक्त भी कई महान दर्शन हुए, जिन्होंने भारतीय समाज को प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक अपने चिंतन से समृद्ध किया, जो निम्नांकित है-

व्यास मुनि (वेद व्यास)- महाभारत और वेदांत दर्शन के प्रवर्तक रहे हैं। महाभारत एक महान भारतीय महाकाव्य है, जिसने समाज में कर्तव्य, न्यास और शांति के सिद्धान्त पर जोर दिया, जबकि वेदान्त ने ज्ञान, मुक्ति और आध्यात्मिक विकास के महत्त्व पर प्रकाश डाला

है। व्यास जी भारतीय दार्शनिक परम्परा के महत्त्वपूर्ण व्यक्ति माने जाते है वह पुराणों के संकलनकर्ता और वेदों के विस्तारक माने जाते हैं। इन्होंने वेदो के गूढ़ अर्थों को समझाने के लिए उपनिषदों की व्याख्या की।

याज्ञवल्क्य- भारत के वैदिक काल के एक ऋषि तथा दार्शनिक थे। इनको अपने काल का सर्वोपरि वैदिक ज्ञाता माना जाता है। इन्होंने शतपथ ब्राह्मण की रचना की है। इन ग्रन्थों में इनको राजा जनक के दरबार में हुए शास्तार्थ के लिए जाना जाता है।

कणाद- कणाद का योगदान भारतीय तर्कशास्त्र और विज्ञान के क्षेत्र में बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उनका सबसे बड़ा योगदान वैशेषिक दर्शन के विकास में था, जो कि एक आत्मनिर्भर और तार्किक प्रणाली है।

शंकराचार्य- शंकराचार्य का भारतीय समाज के समृद्धि और सामर्थ पर गहरा प्रभाव पड़ा, वे अद्वैत वेदांत के प्रवर्तक थे। उनके विचारों ने भारतीय दर्शन, धर्म और संस्कृति को एक नई दिशा प्रदान की। इन्होंने पूरे भारत में सांस्कृतिक और धार्मिक एकता को बढ़ावा दिया। उन्होंने चार प्रमुख मठों की स्थापना की (दक्षिण, उत्तर, पश्चिम और पूर्व) ताकि विभिन्न वेदांत का प्रचार हो सके और धार्मिक विवादों को कम किया जा सके।

आधुनिक भारतीय दर्शन में कई प्रमुख दार्शनिको ने भारतीय ज्ञान परम्परा को नयी दिशा दी है। इन दार्शनिकों ने भारतीय संस्कृति, धर्म और समाज के परिप्रेक्ष्य में समसामयिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया। कुछ प्रमुख आधुनिक भारतीय दार्शनिक और उनके विचार निम्नांकित है-

स्वामी विवेकानन्द- विवेकानन्द ने वेदांत और योग के सिद्धान्तों को पश्चिम दुनिया में प्रस्तुत किया। उन्होंने पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति और आत्मविश्वास को पुनः जागृत किया। उनके विचारों ने भारतीय समाज में आत्मनिर्भर और आध्यात्मिक जागृति की भावना को प्रोत्साहित किया।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भारतीय और पश्चिम दर्शन के बीच संवाद स्थापित किया। वेदांत और उपनिषद की गहरी समझ के साथ उन्होंने भारतीय दर्शन को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया।

आचार्य रजनीश (ओशो) ने ध्यान, प्रेम और स्वतन्त्रता के विषयों पर गहन विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने पारंपरिक धार्मिक विचारों को चुनौती दी और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के प्रति जागरूकता बढ़ाई।

महात्मा गाँधी- गाँधी जी ने सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धान्तों को राजनीति और सामाजिक आंदोलनों में लागू किया।

निष्कर्षः

सम्पूर्ण निष्कर्ष यह स्पष्ट करता है कि भारतीय दार्शनिक परम्परा एक अद्वितीय और समृद्ध परम्परा रही है। जिसने जीवन, ब्रह्म, धर्म, समाज और ज्ञान के बारे में गहरे विचार दिये। इस परंपरा ने न केवल भारतीय समाज की बल्कि विश्व के अन्य हिस्सों को भी प्रभावित किया। भारतीय ज्ञान परम्परा न केवल दार्शनिक बल्कि धार्मिक और तात्विक दृष्टिकोण से भी महत्त्वपूर्ण है। भारतीय दार्शनिकता का मूल आधार आत्म ज्ञान की खोज और जीवन में उद्देश्यों को समझने पर केन्द्रित है। अतः आज के समय में भारतीय दार्शनिकता का अध्ययन न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से, बल्कि जीवन के मौलिक प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के रूप में भी महत्त्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची:

1. हरि वियोगी, हमारी परंपरा (2020) सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन नई दिल्ली।
2. योजना मई (2024), कला, संस्कृति एवं विरासत ।
3. योजना (2025), भारतीय ज्ञान परम्परा।
4. राय, डॉ. बर्नाली, भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, (JETIR)
5. https://www.ijcrt,org
6. https:// gyanvivdha.com